आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2710 • उदयपुर, शुक्रवार 27 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

नांदेड़ (महाराष्ट्र) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 3 व 4 अप्रेल 2022 को लोकमान्य मंगल कार्यालय अण्णा भाउ साठे चौक, नांदेड़ में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता कृपा सिंधु दिव्यांग सेवा संघटना रहा। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 222, कृत्रिम अंग माप 92, कैलिपर माप 51 की सेवा हुई तथा 40 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री बालयोगी वेंकेट स्वामी जी महाराज, अध्यक्षता श्री सुदेश जी मुकाबार (शिविर संयोजक), विशिष्ट अतिथि श्री विनोद जी राठौड़ (माहुर, संयोजक), श्री लक्ष्मीकांत जी, श्री लक्ष्मी नारायण जी, श्री प्रदीप जी बुकरेवार, श्री इगडरे जी पाठील, श्री राजेश्वर जी मेडेवाल, श्री सचिन जी पालरेवार (समाज सेवी) रहे। डॉ. वरुण जी श्रीमाल (ऑर्थोपेडिक सर्जन), श्री रिहांस जी महता (पी.एन.डो.), श्री किशन जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में हरिप्रसाद जी शर्मा

(शिविर प्रभारी), श्री गोपाल जी गोस्वामी, श्री सत्यनारायण जी मीणा (सहायक) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

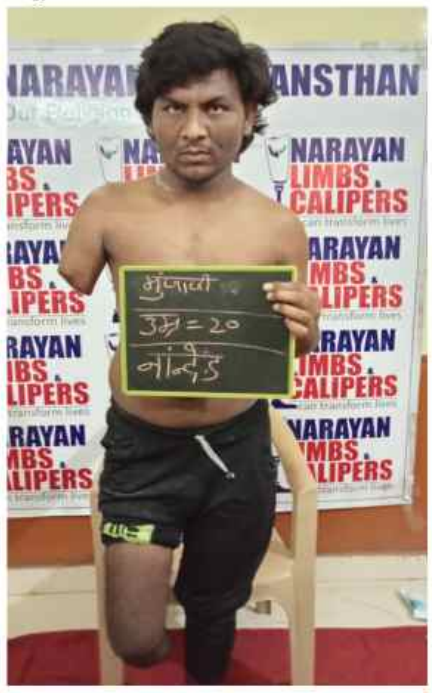

अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षो से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 7 व 8 मई 2022 को डी.एस. बालमंदिर दुबे का पडाव, अलीगढ़ में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता हैड्स फॉर हेल्प रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 116, कृत्रिम अंग वितरण 77, कैलिपर वितरण 39 की सेवा हुई। उक्त शिविर में मुख्य अतिथि डॉ. के.वर्मा जी (एम.एच.ओ. राजकीय चिकित्सा) अध्यक्षता डॉ. सुनिल कुमार जी (अध्यक्ष हैंड्स फॉर हेल्प), विशिष्ट अतिथि डॉ. अमित जी गुप्ता,डॉ. भरत जी वैश्णव, डॉ. मनोज जी गर्ग (समाजसेवी) रहे।

डॉ. नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो.), श्री नाथुसिंह जी, श्री उत्तमसिंह जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में श्री अखिलेश जी (शिविर प्रभारी), श्री प्रकाश जी डामोर, श्री सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री मनीश जी हिन्डोनिया (सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (विडियोग्राफी) ने भी सेवायें दी।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल निःशुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 29 मई, 2022

- अग्निहोत्री गार्डन, सदर बाजार, होशंगाबाद, म.प्र.
- शेहगांव, बुलढाना, म.प्र.
- अम्बाला, हरियाणा

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 29 मई, 2022

स्थान

राजपूत धर्मशाला, सिरसा रोड़, हिसार, हरियाणा, सायं 4.30 बजे

काली माता मंदिर, सत्य नगर, जनपथ रोड, भुवनेश्वर, उड़सर, सायं 4.30 बजे

अग्रेहा भवन, गोरी गणेश मंदिर के पास, रायगढ़ सायं 5.00 बजे

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'

'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

झांसी (उत्तरप्रदेश) में नारायण सेवा

नारायण सेवा संस्थान का ध्येय है कि दिव्यांग भी दौड़ेगा–अपनी लाठी छोड़ेगा। इस क्रम में संस्थान की शाखाओं व दानदाताओं के सहयोग से दिव्यांग जाँच, उनका ऑपरेशन के लिये चयन तथा कृत्रिम अंगों का माप लेना व अंग लगाने का कार्य गति पर है। ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 24 अप्रेल 2022 को महाराजा अग्रसेन इन्टर कॉलेज झांसी, (उत्तरप्रदेश) में हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्रीमान् संजीव जी बुधोलिया, श्री रामकथा आयोजन समिति झांसी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 51, कृत्रिम अंग वितरण 32, कैलीपर वितरण 26 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् अनुराग जी शर्मा (सांसद, झांसी), अध्यक्षता श्रीमान् पवन गौतम जी (अध्यक्ष, जिला पंचायत झांसी), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् रामतीर्थ जी सिंहल (महापौर नगर निगम, झांसी), श्रीमान् संजीव जी बुधोलिया (श्री रामकृपा सेवा समिति अध्यक्ष), श्रीमान् विद्या प्रकाश जी दुबे (सभासद वार्ड न. 14 झांसी), श्रीमान् लक्ष्मीकांत जी (प्रधानाचार्य) रहे। नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो), श्री भंवरसिंह जी (टेक्निशियन) सहित शिविर टीम में मुकेश जी शर्मा , श्री देवीलाल जी मीणा, श्री हरीश सिंह जी रावत, श्री कपिल जी व्यास (सहायक), श्री अनिल जी पालीपाल (फोटोग्राफर) ने भी अमूल्य सेवायें दी।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

तो परम्पिता जब एक हुए हमारे ब्रह्माण्ड़ एक हुआ। विश्णु भगवान एक हुए उनके 24 अवतार हुए। कपिल भगवान हुए, मोहिनी अवतार हुआ। वाराह अवतार हुए, मत्स्य अवतार हुआ तो ये सब अवतार विष्णु भगवान के अवतार हुए लाला तो एक पिता की सब सन्तान तो ये मेरा ही स्वरुप है कोई गुस्सा कर रहा है। अरे मैं अपने आप में गुस्सा कर रहा हूँ। अरे मैं इस पर क्रोध क्या करुं। मैं अपने आप पर क्रोध कर रहा हूँ। मैं अपना खून क्यो जलाऊं, क्यो डॉयबिटिज पैदा करुं, क्यो बी.पी पैदा करुं। मैं शांत रहूं, मैं आनन्दित रहूं। मैं परिवर्तन की हवा को समझ लूं। मैं अपनी मन की गांठे खोल लूं। ये गांठे किसने बांधी किसी और ने आपको हथकड़ी बेड़ी में नहीं बांधा है। आपने ही गांठे बांधी है, गांठ

बन्धन–बन्धन क्या करते हैं,
बन्धन मन के बन्धन है।
साहस करो उठो झटका दो,
बन्धन मन के बन्धन है।।

ये मन के बन्धनों को तोड़ने की कथा, ये आनन्दित करने की कथा, ये सत्य को समझने की कथा।

हनुमान जी को कोई आकषर्ण नहीं। रावण ने पूछा तूं कौन है कहां से आया है। बोले जिनकी कृपा के एक निमिश मात्र से तूने चराचर को जीत लिया है रावण हे, देवताओं के शत्रु, मैं भगवान राम का दूत हूँ। तेरे को कहने आया हूँ। अभी भी समय है बदल जाओ कभी– कभी आपने सुना होगा।

आ लौटकर के आजा मेरे मीत.....।
.....तुझे मेरे गीत बुलाते है ।।

लौटकर के आ जाओ। अभी भी अवसर है रावण सीता माता को आगे करो। उनको चरणों को निहारते हुए पीछे–पीछे चलो हाथ जोड़कर के चलो, प्रभु से क्षमा मांग लो फिर अचल राज्य करो।

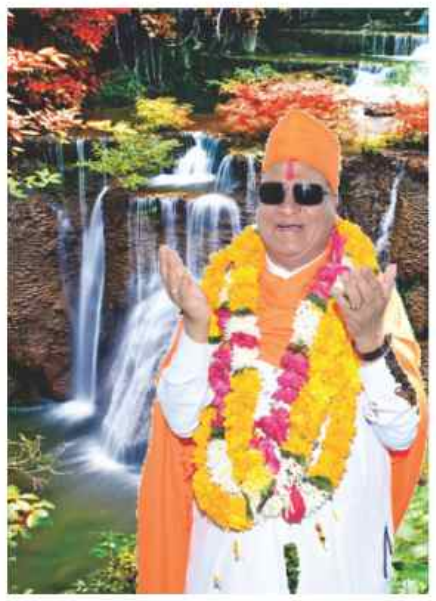

मायने

दो साथी एक रेस्तरां में गये। पहले डोसा खाया, फिर दो लस्सी मंगाई। एक साथी ने लस्सी पीनी शुरू ही की थी कि उसे गिलास में बाल दिखा। उसने वहाँ के लड़के को बुला कर कहा, 'देखो इसमें कितना बड़ा बाल है?' इधर दीजिए साहब, दूसरा लेकर आता हूँ।' बालक ने सहमे हुए स्वर में कहा। 'तुम लोग कुछ नहीं देखते, सफाई का बिल्कुल ध्यान नहीं रखते हो।' दूसरा साथी कुछ तेज आवाज में बोला तो काउंटर पर बैठे दुकानदार ने कहा, 'क्या हुआ साहब?' ग्राहक ने अपनी शिकायत दुकानदार को बताई। 'ठीक है सर, आप उसे मत पीजिए। वहीं छोड़ दीजिए।' इसी के साथ उस नौकर से दूसरा गिलास लाने का आदेश दिया। दुकानदार ने उस लड़के को बुलाया, 'क्यों बे ! तेरे को दिखाई नहीं पड़ता। लस्सी में बाल कहां से आ गया? हरामखोर बैठे–बैठे तीस रुपये का नुकसान करा दिया। दुकानदार ने रजिस्टर में उसका खाता खोला और उसके नाम तीस रुपये चढ़ा दिये फिर बोला, 'ठीक है जा, आगे से ध्यान रखना। तेरी पगार से तीस रुपये कट जाएँगे। तुम लोगों की लापरवाही से मैं अपना धंधा चौपट नहीं करूँगा।'

दूसरी ओर बैठा एक ग्राहक चुपचाप सारी गतिविधियों को गौर से देख रहा था। थोड़ी देर में काउंटर पर आया और पूछा, 'कितना बिल हुआ?' 'सत्तर रुपये!' दुकानदार के कहने से पहले ही उस नौकर ने बताया, जो उसकी मेज पर खाना रख रहा था। ग्राहक ने सौ रुपये का एक नोट देते हुए दुकानदार से कहा, 'पूरा– पूरा लीजिए, सत्तर मेरे और तीस रुपये, जो आपने इस नौकर के खाते में चढ़ाया है, उसे काट दीजिएगा। उसके जीवन में तीस रुपये बहुत मायने रखते हैं।'

सम्पादकीय

एक प्रसिद्ध कवि ने बहुत ही प्रेरक गीत लिखा है – सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्तां हमारा। इसके पीछे अनेक प्रकार की भावात्मक बातें है हमारा मुल्क हमारे लिये सर्वश्रेष्ठ तो होता ही है, किन्तु कई ऐसी विशेषतायें भी हैं जो भारत को विश्व के अन्य देशों से अलग व श्रेष्ठ सिद्ध करती है। यह अपना ही देश है जहाँ विश्व के लगभग सभी धर्मों के अनुयायी रहते हैं। न केवल रहते हैं वरन उनका सामाजिक ताना बाना भी सुदृढ़ है। सर्वधर्म समभाव के वाक्य को चरितार्थ होता देखना हो तो यहां है। ज्ञान और विज्ञान का समन्वय यहां सदियों से हैं। विज्ञान को भौतिक व ज्ञान को आध्यात्मिक उन्नति का आधार माना गया है। ज्ञानी और विज्ञानी को यहाँ समान सम्मान मिलता रहा है। यहां की एक और परम उपलब्धि है कि भारतीय संस्कृति ने सभी संस्कृतियों को आत्मसात् किया है। हरेक धर्म व संस्कृति को पूरा सम्मान दिया है। सबके कल्याण का भाव भी यहीं दिखाई देता है। इसलिये तो जहां से अच्छा है हमारा देश।

कुछ काव्यमय

कोई भी देश
केवल भूमि का खण्ड
नहीं होता है।
वह अपने निवासियों को अपनी
गरिमा, संस्कृति और
भावनाओं में भिगोता है।
अपने देश को इसमें महारत है।
इसलिये सबसे ऊँचा भारत है।

अपनों से अपनी बात

कण-कण में भगवान

हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिए कि कण–कण में परमपिता परमेश्वर का वास है। इस सृष्टि की सभी रचनाएं, यहाँ तक कि हमारा शरीर भी ईश्वर की ही देन है।

एक संत अपने शिष्यों को शिक्षा के दौरान एक बात हर रोज दोहराते, 'कण–कण में भगवान है।' वे उन्हें समझाते कि ऐसी कोई वस्तु और स्थान नहीं है जहाँ भगवान नहीं हो। प्रत्येक वस्तु को हमें भगवान मान कर नमन् करना चाहिए। एक दिन उनका शिष्य सदाशिव भिक्षा के लिए निकला। रास्ते में सामने से एक हाथी दौड़ता आता दिखाई दिया। महावत लगातार लोगों को सावधान करता आ रहा था। तभी सदाशिव को गुरू की

बात याद आ गई। वह रास्ते में ही निडरता और भक्ति भाव से खड़ा रहा। वह मन ही मन कह रहा था, 'मुझमें भी भगवान है और इस हाथी में भी भगवान है। फिर भला भगवान को भगवान से कैसा डर? 'महावत ने जब सदाशिव को रास्ते में खड़े देखा तो वह जोर से चिल्लाया, 'सुनाई नही देता? हट जाओ! क्यों मरने पर तुले हो', लेकिन सदाशिव पर महावत की बात का कोई असर नहीं हुआ। वह अपनी जगह डटा रहा। तब तक पागल हाथी बिल्कुल नजदीक आ चुका था। उसने सदाशिव को सूंड में लपेटा और घूमा कर फेंक दिया। सदाशिव नाली में जाकर गिरा। उसे बहुत चोट आई। उसके साथी उसे उठाकर आश्रम में ले गए। उसने कहा, 'गुरूजी, आप तो कहते हैं कि कण–कण में भगवान है। हाथी ने मेरी कैसी हालत कर दी?

'गुरू बोले, हाथी में भी भगवान का वास है, परन्तु तुम यह कैसे भूल गए कि उस महावत में भी भगवान है जो तुम्हें दूर हटने के लिए कह रहा था। तुम्हें उसकी बात भी तो सुननी चाहिए थी। सदाशिव बोला, आपने सही कहा गुरूदेव, मैंने आपकी बात को सिर्फ सुना ही था, परन्तु उसे समझा नहीं। अतः मुझे क्षमा करे।—**कैलाश 'मानव'**

शब्दों का महत्व

अपेक्षाएँ दुःखों को जन्म देती हैं। हम परिवार के सदस्यों के साथ अधिक मोह एवं आसक्ति रखते हैं, यही मोह व आसक्ति मनुष्य के दुःख का कारण बनती है। मोह में बंधकर व्यक्ति अपने कर्तव्यों को भूल जाता है। कर्तव्यों को भूलना नुकसानदायक होने के साथ–साथ कष्टकारक भी होता है।

जिह्वा ही शरीर का सबसे ज्यादा अच्छा और सबसे खराब भाग है। यही शत्रुता और यही मित्रता लाती है। अधिकतर लड़ाई–झगड़े आपसी मतभेद की वजह से कम, लेकिन जिह्वा के अनुचित प्रयोग की वजह से ज्यादा होते हैं।

एक बार की बात है, एक राजा अपने सैनिकों और मंत्रियों के साथ

किसी स्थान पर भ्रमण कर रहे थे। अचानक राजा को प्यास लगी और उन्होंने अपने सैनिक से पानी लाने को कहा। सैनिक पानी की तालाब में इधर–उधर गया। थोड़ी देर बाद उसे दूर कहीं एक अंधा व्यक्ति पानी के मटके के साथ बैठा मिला। सैनिक उसके पास गया और बोला, "ऐ अंधे! महाराज को प्यास लगी है, पानी दे।"

सैनिक की बात सुनकर अंधे ने सैनिक से कहा, "जाओ, मैं तुम्हें पानी नहीं दूँगा, तुम सैनिक हो, सैनिक ही रहोगे।" सैनिक ने यह बात राजा को बताई। राजा ने अपने मंत्री को अंधे के पास पानी लाने भेजा। मंत्री ने अंधे से कहा, "ओ अंधे महाशय, राजा हेतु पानी दीजिए।" मंत्री की बात सुनकर अंधे ने मंत्री से कहा, "हे मंत्री! तुम कुटिल व्यक्ति हो और मैं कुटिल व्यक्तियों को पानी नहीं देता।" मंत्री ने सारा वृतान्त राजा को कह सुनाया। इस बार राजा स्वयं उस व्यक्ति के पास गए और कहा, "हे महात्मन्! मुझे प्यास लगी है और मैं आपसे पानी की याचना करता हूँ।" अंधे व्यक्ति ने सहर्ष राजा को पानी दिया। पानी पीने के पश्चात् राजा ने उससे पूछा, "हे सज्जन पुरुष! यह अत्यन्त आश्चर्य की बात है कि आप देख नहीं सकते तथापि आपने सैनिक, मंत्री और मुझे पहचान लिया कि कौन क्या है? आपने उन दोनों को पानी देने से मना कर दिया और आपने मुझे आदरपूर्वक पानी पिलाया।" राजा की बात सुनकर उस व्यक्ति ने सम्मानपूर्वक कहा, "हे राजन् उनके द्वारा प्रयोग किए गए शब्दों के आधार पर ही मैं पहचान पाया कि कौन क्या है? निम्न स्तर के शब्दों का प्रयोग निम्न प्राणी ही करता है और सम्मानीय शब्दों का प्रयोग कुलीन व्यक्ति करता है। पानी देने या न देने के पीछे कारण भी, शब्दों का प्रयोग ही है।" शब्दों के द्वारा ही आपकी पहचान होती है। शब्दों में स्नेह और विनम्रता सुनने वाले शत्रु को भी मित्र बना देते हैं तथा शब्दों की कड़वाहट और निंष्टता परिवार के सदस्यों को भी शत्रु बना देती है। अतः शब्दों में क्रोध कभी भी नहीं लाएँ।

— **सेवक प्रशान्त भैया**

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

अगले दिन सुबह 6 बजे के पूर्व ही सब एकत्रित हो गये और बस की प्रतीक्षा करने लगे। 6 बज गये मगर बस का कहीं पता नहीं था। सभी का यही कहना था कि 5–10 मिनट तो लेट होना स्वाभाविक है मगर जब ये 5–10 मिनट, घन्टे भर में बदल गये तो सबको चिन्ता हो गई। बस वाले को फोन करने का सोच ही रहे थे कि उसका फोन आ गया, बस खराब हो गई है इसलिये वह नहीं आ पाया। बस के जल्दी ठीक होने की संभावना भी नहीं है इसलिये उसका आ पाना मुश्किल है। कैलाश को ऐसा लगा जैसे उसके पांवों के नीचे से धरती खिसक गई हो, सारी तैयारी हो गई, पई में लोग इन्तजार कर रहे होंगे, अस्पताल में पिता मौत से संघर्ष कर रहे हैं इसके बावजूद उसने कार्यक्रम यथावत रखा फिर भी यह मुसीबत। उसने हिम्मत नहीं हारी, उसे लगा जैसे ईश्वर उसकी परीक्षा ले रहे हैं, यह विचार आते ही उसमें गजब की शक्ति आ गई। उसने ठान लिया कि पई तो जाना ही है। अब वह विकल्पों पर सोचने लगा। क्यूं नहीं किसी स्कूल की बस ले ली जाये। रविवार को वैसे भी स्कूलों में छुट्टी रहती है। स्कूल बस का विचार आते ही पहला ध्यान आलोक स्कूल पर गया। आलोक बहुत प्रसिद्ध था तथा उसके पास बहुत बसें थीं। आलोक के संचालक श्यामलाल कुमावत, नगर के प्रसिद्ध व्यक्तियों में से थे। कैलाश का उनसे कभी परिचय नहीं आया था मगर उनकी सहृदयता, सेवाभाव और उदारता बहुत प्रसिद्ध थी। कैलाश ने उन्हें फोन कर अपना परिचय दिया और अपनी समस्या बताई, इसके बाद उनसे विनती की कि आप अगर बस उपलब्ध करवा दें तो डीजल हम भरवा देंगे। श्यामलाल कुमावत को कैलाश की गतिविधियों का आभास था, वे तुरन्त तैयार हो गये और कहा कि आधे–पौन घन्टे में बस आपके पास पहुँच जायेगी।

बस के आते ही सत्तू तथा कपड़ों वगैरह की सामग्री बस की छत पर चढ़ा दी। कैलाश के साथ उसके निकट सहयोगी तथा तमाम एक मुट्ठी आटा देने वाले परिवार थे। इनमें डॉ. आर.के.अग्रवाल की उपस्थिति सबको प्रेरणा दे रही थी। बस के रवाना होते ही भजन शुरू हो गये जो पूरे रास्ते चलते रहे।

पई पहुँचने में सवा घन्टा लगा। पई में पहले से ही सौ–सवा सौ लोग प्रतीक्षारत थे। बस के पहुँचते ही सब उसे घेर कर खड़े हो गये। इन्हें देखकर कैलाश का मन प्रसन्न हो गया कि सब हाथों हाथ सामान उतरवा कर कार्य में हाथ बंटायेंगे। कैलाश ने इनमें से कुछ लोगों को बस पर चढ़ कर सामान उतरवाने में मदद करने को कहा तो एक व्यक्ति तक नहीं हिला, सब हाथ बांधे खड़े रह गए। कैलाश आश्चर्यचकित था, उसने उदयपुर से आये अपने साथियों को बस पर चढ़ाया और सारा सामान खाली कर पास ही स्थित एक चबूतरे पर जमा दिया।

अंश - 107

उम्मीद से दूर हुई उदासी

रामकेवल–शेषावती निवासी काशा भटेरा जिला –सुल्तानपुर (उ.प्र.) खेतीहर साधारण परिवार का 6 वर्षीय पुत्र शैलेष जन्म से ही दोनों पाँव में पोलियो रोग के कारण उठने–बैठने से लाचार है। गाँव के आस–पास के शहरों में इलाज भी करवाया पर कोई कारगर नहीं हुआ। नारायण सेवा संस्थान के रतनलाल डिडवाणिया अस्पताल में इलाज के लिए बेटे को लेकर आए। श्री रामकेवल ने बताया कि गरीबी और ऊपर से बेटे के इस दुःख से पूरा परिवार ही टूट गया। इसी वर्ष उनके पड़ोस के गाँव के राम अचल गुप्ता ने हमें नारायण सेवा संस्थान में बेटे की जाँच की सलाह दी। वे भी यहाँ से इलाज करवा कर खुशी–खुशी लौटे थे। इस आशा की किरण के सहारे हम यहाँ आए। बायें पाँव का ऑपरेशन हो चुका है। दायें पाँव के ऑपरेशन किया गया, ऑपरेशन दवा, खाना–पीना और रहने का एक पैसा भी खर्च नहीं हुआ। डॉक्टर की दिखाई उम्मीद ने हमारी उदासी को दूर कर दिया है।

पपीता खाने के फायदे

- फल पपीता सेहत के लिए बहुत ही फायदेमंद होता है। जहां इससे पेट संबधी परेशानियां दूर होती है। वहीं स्किन भी काफी अच्छी हो जाती है। यहीं नहीं इसके और भी कई बेनिफिट्स है।
- जिन लोगों को किडनी की तकलीफ होती है उन्हें रोज पपीता खाना चाहिए।
- दांत संबंधी तकलीफें भी पपीता खाने से दूर होती है। दांत हिलने दांतों से खून आने ऐसी परेशानियाँ से राहत मिलती है।
- पपीता खाने से आंखों की रोशनी भी अच्छी बनी रहती है।
- अगर पेट में कीड़े हों, तो कच्चे पपीते का जूस फायदा करता है। इसे दिन में दो बाद पीने से कीड़े खत्म होने लगेंगे।
- खाली पेट पपीता खाने से बवासीर की शिकायत दूर होती है।
- सेंधा नमक, जीरा पाउड़र और नींबू के साथ खाने पर कब्ज दूर होती है।
- पपीते की पत्तियां भी रामबाण की तरफ काम करता है यह कैंसर को दूर करने में बहुत सहायक होती है। पपीता वजन कम करने में भी काम आता है।
- पपीते को मैश करके फेस पर लगाने से स्किन ग्लोइंग और मुलायम हो जाती है। और स्किल्स भी खत्म हो जाते हैं।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

बेंगलुरु से भी बिटिया पधार गई थी। एक बिटिया अमेरिका उनके फोन आ रहे थे। देखा बड़ा गंभीर माहौल है–बाहर। आईसीयू में थे डॉक्टर साहब भी मिले। कुछ परिचय था उन्होंने कहा कि कैलाश जी स्थिति बहुत सीरियस है। 14 आर्ट्री ब्लोकेज आये हैं, घंटे 2 घंटे के मेहमान ही है– बाबूजी। बचा नहीं पाएंगे। आंखों में आंसू आ गए। मैं उनके पास गया। मेरे को देखकर उनकी आंखों में चमक आई। मैंने प्रणाम किया। कैलाश जी कैलाश जी मुझे मालूम है अपना हॉस्पिटल पूरा नहीं हुआ है। अभी बहुत दिक्कतें हैं आर्थिक। आप चिंता मत करो। मैंने कहा बाबूजी आप तो ठीक हो जाओ। आर्थिक की कोई बात मत करो। हॉस्पिटल तो बन जाएगा। आपका ठीक रहना बहुत–बहुत आवश्यक है। परमात्मा से प्रार्थना करते हैं मैंने कहा अभी आप बोलिए मत। सब ठीक हो जाएगा। आप ठीक हो जाएंगे, स्वस्थ हो जाएंगे। रात को साढ़े 11:00 बजे उसी समय उनके निवास स्थान के भगवान के मंदिर में दर्शन करने गया। जहाँ बाबूजी के साथ पूजा करने जाया करता था। रात को जाकर के साष्टांग धोक देकर के छटपटा करके कांपते हुए प्राण बचा लो आपका एक भक्त आईसीयू में है। उनके द्वारा एक हॉस्पिटल बन रहा है– प्रभु। उनकी पावन इच्छा है कि हॉस्पिटल बने, उसका उद्घाटन उनके द्वारा होवे– ठाकुर जी।

णमो अरिहंताणं,
णमो सिद्धाणं,
णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं,
णमो लोए सव्व साहूणं।
ऐसोपंचणमुक्कारो,
सव्वपावप्पणासणो ।
मंगला णं च सव्वेसिं,
पढ़मम् हवई मंगलं।

मंगल करो– ठाकुर। मंगल करो। आँखों में खूब आँसूं आए। यह आँसूं कोई स्वार्थ के लिए नहीं थे परमार्थ के लिए थे। चैनराज जी लोढ़ा साहब का प्रेम मेरे हृदय में रोम रोम में समा गया था, तड़प रहा था–मैं। नीचे आया उस समय एसटीडी फोन चालू हुए थे। मोबाइल नहीं आए थे। सामने का एसटीडी पीसीओ खुला हुआ था। पब्लिक काल ऑफिस वहां से उदयपुर कमला जी को फोन किया।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 460 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023